राम संदेश

भक्ति, ज्ञान एवं कर्मयोग की आध्यात्मिक पत्रिका

एक राम दशरथ घर डोले, एक राम घट-घट में डोले।
एक राम तिर्गुन से न्यारा, एक राम का सकल पसारा।।

वर्ष 58 | सितम्बर–अक्टूबर 2012 | अंक 5

रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद

विषय -सूची

(सितम्बर-अक्टूबर 2012)

क्रमांक		पृष्टांक
1. राम सुमिर	भजन	01
2. परमार्थ पंथ और संतमत	दादागुरु की देन	02
3. मोक्षप्राप्ति : इच्छाओं का त्याग	प्रवचन गुरुदेव	07
4. संक्षिप्त जीवन	परम पूज्य गुरुदेव	11
5. एक नम्र निवेदन	अध्यक्षीय सन्देश	17
6. घोषणा	कार्यकारिणी समिति	20
7. शोक समाचार		22
8. प्रेम, शान्ति व संतोष से ही परमात्म साक्षात्कार		23

राम ॐ संदेश

भक्ति ज्ञान एवं कर्मयोग की आध्यात्मिक पत्रिका

संस्थापक

ब्रह्मलीन परमसंत डा. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

संरक्षक

डा. करतार सिंह, अध्यक्ष आचार्य

रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग़ाज़ियाबाद

वर्ष 58 ✡ द्विमासिक पत्रिका ✡ सितम्बर-अक्टूबर 2012 ✡ अंक 05

भजन

राम सुमिर, राम सुमिर, एही तेरो काज है।
माया कौ संग त्याग, हरिजू की सरन लाग।
जगत सुख मान मिथ्या, झूठौ सब साज है।
सपने ज्यों धन पिछान, काहे पर करत मान।
बारू की भीत तैसे, बसुधा को राज है।
नानक जन कहत बात, बिनसि जैहै तेरो गात।
छिन छिन करि गयौ काल्ह, तैसे जात आज है।

दादा गुरुदेव की देन

परमार्थ पंथ और संत मत के साधन

किसी काम में, चाहे वह दुनियाँ के मुताल्लिक हों चाहे परलोक के, तरकीब दरकार है, और तरकीब का होना बिला किसी सिद्धांत और उसूल के मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन है।

जब आदमी में कोई ख़ास कमजोरी होती है या बहुत सी कमजोरियाँ होती हैं तो कमजोरी के नुक्स दूर करने के लिए तदबीरें करता है। तदबीरों की सूरतें मुख्य–मुख्य तो कर्म, उपासना जैसी कई सूरतें हो गईं और होती जाती हैं। इन्हीं के मेल–जोल और विभाजन से हजारों मत–मतान्तर, पंथ और सम्प्रदाय कायम हो चुके हैं और न मालूम आगे कितने पैदा होंगे।

अब ग़ौर कर के सब सूरतों की तहकीकात (खोज) की जाए तो सिर्फ नाम और रूप तो अलग–अलग दिखाई पड़ेंगे, लेकिन हर सूरत में सिद्धांत और उसूल अपनी जाती (मूल) और असली सूरत में छुपा हुआ मौजूद मिलेगा। और किसी फ़िरके (सम्प्रदाय) को जहाँ तक मेरा ख़्याल है, अगर हठधर्मी को दूर कर लें तो वह इन्कार नहीं कर सकेंगे कि मूल सिद्धांतों में कोई ख़ास भेद नहीं है। मतभेद का होना लाज़िमी (आवश्यक) है, क्योंकि हर व्यक्ति की फ़ितरत (प्रकृति) और आदतें अलग–अलग होती हैं।

समझने और समझाने के लिए अगर हम लोग सिर्फ़ अपने ही मत के सिद्धांतों को आगे रख कर ग़ौर और विचार कर के नतीजे को देखें तो सिद्ध हो जाएगा कि यही चौसाधन सब मज़हबों में घुसे हुए हैं, और कोई फ़िरका (सम्प्रदाय) इनसे बच कर नहीं रह सकता।

हिन्दुओं में वेदान्त का फ़ल्सफ़ा (दर्शन) सबसे ऊँचा साबित किया गया है। सब किस्म के फ़ल्सफ़े वाले बहस कर कराकर और खूब दलीलों को करके आखिरकार इस जगह चुप होकर बैठते हैं जहाँ वेद का अंत

हो जाता है, यानी मुरक्किब (compound) और मिलौनी चीज़ों से बहुत दूर पहुँचते हैं। और जहाँ इस मामूली कारोबारी अक़्ल का दख़्ल नहीं रहता, इस हालत को महबियत और इस्तग़राकी कैफ़ियत या फ़ना या लय की अवस्था बोलते हैं। ब्रह्म विद्या के जानने वाले इन्हीं कैफ़ियात (दशाओं) और हालातों को द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत, शुद्धाद्वैत के नामों से पुकारते हैं, और इस्लाम धर्म के सूफी संत इन्हीं कैफ़ियतों को 'तौहीद–वजूदी, शहूदी, एहदियत, वहदत, वाहिदियत' में तक़सीम (विभाजित) करते हैं। गरजे की इन ऊँची हालतों पर पहुँचने के लिए जो कोशिश की जाती है वह साधनों के ज़रिये से होती है। उन साधनों की इब्तदाई तक़सीम (प्रारम्भिक विभाजन) सिर्फ चार हैं, जिनको साधन चतुष्टय कहते हैं। बिना इन चार साधनों के कोई अभ्यासी आख़िरी मंजिल पर नहीं पहुँच सकता है।

पहला साधनः– पहला साधन 'विवेक' या तमीज़ है, जिसमें हस्त और नेस्त की तमीज़ हो जाती है। इसका मतलब यह है कि इस बात का ज्ञान हो जाता है कि इस दुनिया में कौन–कौन सी चीज़े फ़ानी या मिट जाने वाली हैं और तबदील होने वाली हैं और कौन सी चीज़े ऐसी हैं जो हमेशा कायम रहती है, नाश और तबदील नहीं होती। इस साधन के आते ही या उसके बाद ही दूसरा साधन आ जाता है।

दूसरा साधनः– इस दूसरे साधन को 'वैराग'(नफरत–अज–दुनियाँ) कहते हैं क्योंकि जब यह तमीज़ (ज्ञान) हो गई कि फ़लां–फ़लां चीज तबदील होने वाली है तो उससे कुदरतन (स्वाभाविक) नफरत पैदा होने लगेगी।तबियत का लगाव उस चीज से हटता जाएगा और नित्य या हमेशा रहने वाली चीज कि तरफ तवज्जो ज़्यादा हो जावेगी।

तजुर्बे (अनुभव) का लाभः– दुनियाँ से नफरत या लगाव का कम हो जाना, इन तीन तरीकों से होता है। या तो दौलत के पदार्थों को खूब भोग लेने से जब हसरतों का पंजा खूब जकड़ लेता है, उस वक्त तबियत का रुझान कम हो जाता है, या रिश्तेदारों–दोस्तों की विमुखता के साबित होने पर या फिर मौतों के हो जाने पर और अपनी मौत का नज़्ज़ारा पेश आ जाने पर दुनिया से तबियत हट जाती है। लेकिन यह तबियत

का हटाव पक्का और मुस्तक़िल (स्थायी) नफरत नहीं है क्योंकि जब यह चीज़े भोग ना ली जावें, उस वक्त तक वासनाओं और ख्वाहिशों का बीज अन्दर दबा हुआ पड़ा रहता है और किसी वक्त और सामान मिल जाने पर फिर उभर खड़े होने का अंदेशा रहता है। बिना मन मरे हुए और साफ़ हुए सच्चा वैराग पैदा नहीं होता। सिर्फ तजुर्बा ही एक ऐसा उम्दा जरिया है जो असली वैराग पैदा करता है।

अब तजुर्बा और साधन की दो सूरतें जो ऊपर बयान की गयी हैं वह सही तो हैं मगर उनका तरीका व इस्तेमाल भिन्न–भिन्न पंथों ने अलग–अलग तरह से कराया और किया है।

वेदान्त के मानने वालों ने दूसरे साधन को यानी वैराग पैदा होने के लिए यह तरकीब अख्तियार की कि पहले सिर्फ यह ख़्याल करना शुरू किया कि माया मिथ्या और नाशवान है, और असली चीज ब्रह्म है। इस तरह ख़्याल से यह साधन शुरू किया, और इस ख़्याल को इस तरह पुख़्ता किया और कराया कि किसी तरह यह बात दिमाग और हाफ़िज़े (स्मरण शक्ति) से हट ही न सके। लेकिन यह सिर्फ़ ख़्याली पहलू से किया गया। असली पहलू को कोई ज़्यादा दख़ल नहीं दिया, हालांकि असली पहलू एक तरह तो जरूर आ गया कि कुव्वते ख़्याल के पुख्ता (इच्छा शक्ति को दृढ़) करने का साधन किया जो वाकई तौर पर सही है।

मगर संत मत वालों ने कुव्वते तमीज़ी या विवेक शक्ति को जो सिर्फ़ ख़्याल से ही पैदा की जाती है, वह असली तजुर्बे के न होने की वजह से पुख़्ता नहीं होती, यह सही माना। अगर खूब ग़ौर कर के देखा जाए तो विवेक और वैराग कोई साधन नहीं हैं, बल्कि किसी खास साधन या साधनों के नतीजे हैं। जब तक इन्द्रियों,मन,बुद्धि,चित्त को साफ़ न किया जावेगा, और मांझा न जावेगा उस वक्त तक सबसे ऊपर वाले तत्व यानी अहंकार की शक्ति किस तरह से तेज और साफ़ हो सकेगी ?विवेक शक्ति खालिस अहंकार तत्व के मातहत है, इसलिए पहले साधन 'विवेक' को साफ़ करना, फिर दूसरे साधन विवेक के नतीजे 'वैराग' को लेकर,संतमत में शुरुआत करायी गयी।

वेदान्त का तीसरा साधन : षट–संपत्ति :– वेदान्त के तीसरे साधन और संत मत के पहले साधन के छः भाग हैं, जिनको षट–संपत्ति (शम दम आदि षटक) कहते हैं। मतलब यह है कि इनसे छः किस्म के फ़ायदे हासिल होते हैं।

पहली संपत्ति का नाम **'शम्'** यानि तस्क़ीने क़ल्ब है जिसके मायने हैं कि दिल का ठहराव हो जावे,दिल इधर उधर न बहके, अपने केंद्र पर रहे। दिल का ठहराव दो तरह से होता है। वैराग और अभ्यास से।साध I लोग अभ्यास को पहले लेते हैं, जिससे कि वैराग ख़ुद–ब–ख़ुद पैदा हो जाता है, लेकिन वेदांती लोग वैराग के ख़्याल को मज़बूत करने को ही अभ्यास मानते हैं।

नेति मार्ग (मनफ़ी) का तरीका ज्ञानियों का है, जो किसी क़दर मुश्किल है। एति मार्ग में अभ्यास, योग और उपासना सरल हैं, क्योंकि नेति मार्ग में हर चीज छोड़ने का अमल किया जाता है और एति मार्ग में क़बूल और अख़्तियार किया जाता है, यानि किसी खास और एक चीज में दिल को लगा लेते हैं। जब इस अमल में दिल एक तरफ लग जाता है तो निहायत आसानी से, बाक़ी और चीज़ों से कुदरती तौर पर हट जाता है और उनकी तरफ मुरव़ातिब (आकर्षित) नहीं होता।

'शम्' के अतिरिक्त पांच संपत्तियां इस प्रकार हैं –

१. बाह्येन्द्रिय वशत्तियों का निरोध करके प्रत्येक इन्द्रिय को उसके व्यापार से विमुख करना **'दम'** यानी दमन कहलाता है।

२. इन्द्रियों का दमन हो जाने पर विषयों की ओर उनकी पुनरावशत्ति न होने देने को **'उपरति'** कहते हैं। एक बार निरोध करने पर भी बार बार विषयों की ओर दौड़ना इन्द्रियों का स्वाभाविक धर्म है। अतएव सदा उनकी लगाम खींचते रहना चाहिए, इसी को उपरति कहते हैं।

३. हर अच्छी बुरी बात को बर्दाश्त यानी हमेशा द्वन्द सहन करने की शक्ति को **'तितिक्षा'** कहते हैं। हानि–लाभ, शीत–उष्ण, सुख–दुःख,

राग–द्वेष इत्यादि द्वन्द कहलाते हैं। स्नान–संध्यादि कर्म करते समय गर्म–सर्द की जो बाधा होती है उसकी कोई परवाह नहीं, हमारा कर्माचरण पूरा होना चाहिए, तथा प्रारब्ध–वेग से उत्पन्न होने वाले सुख–दुख हमें भोगने ही चाहिए, उनसे कोई बच नहीं सकता। इस प्रकार की शीतोष्ण, सुख–दुःखादी के सहन करने की शक्ति को तितिक्षा कहते हैं।

४. चौथा साधन **'समाधान'** है। सम्पूर्ण विषयों में सदा शांत–वृत्ति रह कर संत–वाक्य–श्रवण में अत्यंत आदर–बुद्धि रखना समाधान है।

५. पांचवा साधन **'श्रद्धा'** है। उसकी व्याख्या यह है कि सद्गुरु के उपदेश और सत्पुरुषों के किये हुए महाकाव्य विवरण पर पूर्ण विश्वास रखना – उनमे संशियत बुद्धि कभी न होना **श्रद्धा** कहलाती है।

- अभी तुमने ईश्वर देखा नहीं है, इसलिए उसे प्राप्त करने के लिए पहले उससे मिलो जिसने ईश्वर को देखा है, वही अभी तुमने ईश्श्वर देखा नहीं है, इसलिए उसे प्राप्त करने के लिए पहले उससे मिलो जिसने ईश्वर को देखा है वही तुम्हें ईश्वर का दर्शन करा तुम्हें ईश्वर का दर्शन करा सकता है।सकता है।
- ज्ञान में शान्ति है, वह तुम्हें बाहर से नहीं मिलेगा। ज्ञान ज्ञान में शान्ति है, वह तुम्हें बाहर से नही मिलेगा। ज्ञान अन्तर में है। उसके लिए आन्तरिक साधन अन्तर में है। उसके लिए आन्तरिक साधन करने होंगे। करने होंगे।
- अपने जीवन में आन्तरिक प्रसन्नता लाओ। यह बहुत बड़ा अपने जीवन में आन्तरिक प्रसन्नता लाओ। यह बहुत बड़ा ईश्वरीय गुण है। ईश्वरीय गुण है।

प्रवचन गुरुदेव – डा. श्रीकृष्णलाल जी महाराज

मोक्ष प्राप्ति के लिये अनिवार्य है - इच्छाओं का त्याग

इन्सान का मन एक बेजान चीज़ है। सुरत यानी आत्मा की धार चैतन्य और अजर–अमर है। मन अपनी जीवन शक्ति इसी आत्मा की धार से लेता है और दुनियाँ की चीजों का आनन्द इन्द्रियों द्वारा भोगता है। जैसे–जैसे वह सांसारिक वासनाओं के आनन्द में फँसता जाता है वैसे वैसे उन भोगों की चाह बढ़ती जाती है। आत्मा मन का रूप धारण कर लेती है और मन के आधीन होकर जिधर वह ले जाता है उधर ही चलती जाती है। मन दुनियाँ के सामान की तरफ दौड़ता है और आत्मा की शक्ति पाकर वासनाओं की तृप्ति करता है। एक वासना अनेक वासनाओं को जन्म देती है और इस तरह अनेकानेक वासनायें बनती जाती हैं, जिनकी तृप्ति इंसान के इस छोटे से जीवन में नहीं होती।

जब अंत समय आता है तो मन और शरीर नाश को प्राप्त होते हैं और आत्मा, जो अविनाशी है, अपने वर्तमान जीवन की वासनाओं की गठरी लिये हुये कर्मो के अनुसार दूसरा शरीर धारण करती है। जिस प्रकार की अतृप्त वासनाओं का भार ज़्यादा होता है, उसी प्रकार की योनी में जन्म मिलता है। अगर इन्द्रिय भोग की इच्छा प्रबल रही तो सुअर और कुत्ते जैसी योनियों में जन्म पाता है, धन की लालसा है तो सांप बनकर धन पर आ बैठता है। इसी प्रकार और भी योनियाँ ऐसी जगह मिलती हैं, जहाँ पर उसकी पिछली ख़्वाहिशें पूरी हों। उनसे निवृत्ति पाकर आत्मा बाकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए दूसरी योनियों में शरीर ध ारण करती है और इस तरह आवागमन के क्रम का अंत नहीं होता।

यदि सौभाग्य से मनुष्य शरीर धारण करने पर जीव को कोई सच्चा और वक्त का पूरा गुरु मिल जाये जो सुरत को उलट कर अंतर या ऊपर की तरफ चढ़ाई का रास्ता समझा दे, यानि मन का घाट बदल दे तो जीव

का कल्याण हो जाता है। और अगर मनुष्य उसके बताये हुए रास्ते पर कायम रहे तो कम से कम एक जन्म वरना ज़्यादा से ज़्यादा पाँच जन्मों में इस आवागमन के चक्कर से छूट सकता है। मन के घाट से मतलब यह है कि मन दुनियाँ की जिस चीज़ को चाहता है उसी के विषय में हर वक्त मन में ख़्यालात उठते रहते हैं। कंचन, कामिनी और अहंकार यही तीनों चीज़ें मन को फँसाने के लिए ज़बरदस्त जाल हैं, उलट फेर कर किसी न किसी रूप में यही तीनों चीज़ मन में समायी रहती हैं और इंसान इन्हीं के बारे में सोचा करता है। कंचन यानि धन से मतलब सिर्फ रूपए पैसे से ही नहीं है, संपत्ति से भी है जैसे मकान, दुकान, नौकरी आदि। इसके अलावा और भी चीजें जो रूपए पैसे से सम्बन्ध रखती हैं जैसे मान–बड़ाई, इज़्ज़त, पद यह सब अहंकार के अंग हैं और धन के दायरे में आते हैं।इसी तरह स्त्री और उससे सम्बंधित विचार कामिनी के दायरे में आते हैं। सारा संसार ही इन तीनों के दायरे में नाच रहा है। अगर इन सबके या इनमें से किसी ख़ास चीज के ख़्याल आते हैं और मन हमेशा इन्हीं के बारे में उधेड़–बुन किया करता है तो उसने यहाँ अपना घाट बना लिया है। इस घाट को बदलना है अर्थात जहाँ–जहाँ और जिन–जिन सांसारिक विषयों में फँसा है उन स्थानों और वस्तुओं से उसे ऊपर निकलना होगा।संत इसे ही घाट का बदलना कहते हैं।अगर यह घाट नहीं बदला गया तो मरते वक्त जब सुरत वापस लौटती है तो बड़ी तकलीफ होती है। इसलिए महापुरुष अपने जीवन काल में ही सुरत के उतार–चढ़ाव का इतना अभ्यास कर लेते हैं कि उन्हें मरते वक्त कोई तकलीफ नहीं होती।

परम संत परमात्मा राम चन्द्र जी महाराज कहा करते थे कि एक बार उन्हें यह जानने कि इच्छा हुई कि दुनियाँदार की मौत किस तरह होती है और संतों की किस तरह। उन्होंने स्वप्न देखा कि उनके गुरुदेव आये हैं। लकड़ी के दो तख़्त जिन पर दो सफ़ेद चादरें बिछी हुई थी, महात्मा जी को दिखाकर कहने लगे कि देखो, एक तख़्त पर जो चादर बिछी हुई है उसमें सैकड़ों हजारों छोटी–छोटी कीलें ठुकी हैं और उनके ज़रिये वो तख़्त में जड़ी हैं। उसे खींचकर उठाया तो उसके ठुकड़े ठुकड़े

हो गये। जहाँ–जहाँ वे कीलें जड़ी थीं वहीं–वहीं वे अटकीं और चीथड़े होकर वहाँ से उखड़ीं। उन्होंने फ़रमाया कि यह दुनियादार की मौत है। सुरत सफ़ेद चादर है और कीलें उस दुनियादार की अगणित इच्छायें हैं जिनमें वह फँसी रहती है। मरते वक्त आसानी से उन इच्छाओं से इसी तरह नहीं निकलने पाती जिस तरह यह चादर इन कीलों से नहीं निकली। फिर दूसरे तख़्त की तरफ इशारा किया। तख़्त में कीलों के ऊपर चादर थी। उस चादर की सब कीलें निकल चुकी थी। उसे खींचा तो एकदम आसानी से बिना किसी रुकावट के चादर साफ़ खिंची चली आई। उन्होंने फ़रमाया कि देखो संत अपनी जिन्दगी में ही समस्त इच्छाओं से इस तरह अपने को पश्थक (अलहदा) कर लेता है जैसे यह चादर कीलों से ऊपर आ गयी। इसलिए मरते वक्त उसे कोई तकलीफ नहीं होती।

कहने का आशय यह है कि सुरत को सारी इच्छाओं से पाक–साफ़ करना होगा। इसे निर्मल बनाना होगा। परमात्मा से मिलने के अतिरिक्त कोई ख़्वाहिश दिल में बाकी न रहे। यही मन को शांत करना है। लेकिन यह एकदम और ऐसी आसानी से नहीं हो जाता।

इसका तरीका है – गुरु का सत्संग करना और गुरु की दया प्राप्त करना। वैराग्य सत्संग से पैदा होता है और आत्मा को शक्ति मिलती है। अभ्यास से मन का घाट बदलता जाता है। वह तम से रज और रज से सत् पर आ जाता है। सत्संग से मन का मैल बराबर धुलता रहता है। गुरु दर्शन से, उनके चरणों में बैठने से, उनके वचन सुनने और उन पर अमल करने से मन का घाट बदलने लगता है। उनसे प्रीति करने से आहिस्ता–आहिस्ता वह ईश्वर की प्रीति में तब्दील हो जाती है।इसके लिए प्रीति की जरूरत है और साथ प्रतीति की भी। प्रतीति यह है कि केवल गुरु ही हमारे सच्चे हितैषी और शुभ चिन्तक हैं।वह जो फरमाते हैं वह सब हमारे कल्याण के लिए ही है, उसमें उनका अपना कोई स्वार्थ नहीं है और यह कि वे अनुभवी पुरुष हैं, आत्मा का साक्षात्कार करा सकते हैं।प्रीति यह है कि उनकी हर एक बात को अपने हित की जानकर उस पर अमल करने की कोशिश करें, कोई भी काम ऐसा न करें जिससे वो नाखुश हों। अपना सब कुछ उन पर न्यौछावर कर दें, हर वक्त उनके

स्वरुप यानी उनकी शक्ल का या उनकी बताई हुई विधि का ध्यान करें, तभी मन का घाट बदला जा सकता है।सत्संग में आकर बैठ जाना, वचन सुन लेना और उन पर अमल न करना समय को नष्ट करना है।

सद्गुरु अपनी दया, पहली कृपा दृष्टि में जीव के अन्दर प्रवेश करा देते हैं और वह दया बराबर आती रहती है। उसकी पहचान यह है कि मन अगर संसार की किसी चीज में फ़ँस भी जाता है तो वहाँ उलझता नहीं। उसे वहाँ सुख और शान्ति नहीं मिलती और जी में एक उथल पुथल सी मची रहती है जो उस चीज़ में फ़ँसने से बचा लेती है और अपने असली आदर्श यानी परमात्मा, जो कि हमेशा का सुख और शान्ति का भण्डार है, उसकी तरफ मोड़ती है।

इसी ध्येय अर्थात् जीवन मरण के चक्र से निकलकर मोक्ष पाने के लिए ही अपनी सभी कामनाओं और अभिलाषाओं का त्याग करना जरूरी है।पर इस काम में मन को बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। हर एक बंध ान ढीला करना पड़ता है। 'इल्लत, क़िल्लत और ज़िल्लत' यानि बिमारी, गरीबी और बेइज्जती को नियामत समझकर सहन करना पड़ता है।इससे मन पर चोट पड़ती है और वह ढीला पड़ जाता है। यही तप है, और सुरत शब्द का अभ्यास या जो भी विधि गुरु ने बताई हो, वह जप है। इसी जप तप से इच्छाओं को त्याग करते हुए इंसान अपने असली लक्ष्य तक पहुँच सकता है।

- ईश्वर तो एक शक्ति है, न उसका कोई नाम है, न रूप, न गुण जिसने जो नाम रख लिया वही ठीक है।
- ईश्वर प्राप्त करने हेतु घर त्यागकर जंगलों में भटकने की आवश्यकता नहीं है, वह तो घर में ही मिल जायेंगे

परम संत डा. करतार सिंह जी साहब

संक्षिप्त जीवन परिचय

संतो एवं महापुरुषों की जीवनशैली और उनकी कृपा का कुछ भी वर्णन करना हम साधारण मनुष्यों के बस की बात नहीं है। उनका गुणगान भी उनकी कृपा से ही सम्भव है। अतः आज पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा और कृपा से ही उनके जीवन के विषय में दो शब्द कहने का प्रयास है जो सूरज को दीपक दिखाने के समान है।

हमारे गुरुदेव परम संत डा. करतार सिंह जी की जीवनी अपने आप में एक सम्पूर्ण ग्रंथ है। इसी में से कुछ चुने हुये मोती प्रस्तुत हैं।

जन्म एवं प्रारम्भिक जीवनः– आपका जन्म 13 जून 1912 को अमृतसर में एक सम्पन्न सिक्ख परिवार में हुआ। आपके पिता सरदार संत सिंह जी बड़े ही मश्दु और सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। जब गुरुदेव लगभग साढ़े सोलह वर्ष के थे तभी उनके पिता परम धाम चले गये। अब एक भाई, एक बहिन और माता की देखरेख का भार आपके ऊपर आ गया।

शिक्षाः– आपने पंजाब में पोस्ट मैट्रिक परीक्षा पास की। 1947 में आप अमृतसर छोड़कर दिल्ली आ गए और आयकर विभाग में इन्स्पैक्टर के पद पर काम किया। साथ ही बी.ए. तथा लॉ की परीक्षायें भी पास की। देश के विभाजन के समय आपने एक मित्र से नेशनल होम्यो स्टोर (जो कि दिल्ली के फ़तेहपुरी में है) खरीद लिया और नौकरी छोड़कर चिकित्सा क्षेत्र में प्रवेश किया।

जीवन दिशा परिवर्तनः– श्रीकृष्णलाल जी महाराज यूँ तो ऐलोपैथिक डाक्टर थे, पर आवश्यकता अनुसार होम्योपैथिक औषधियाँ भी देते थे। इसलिये वे अक्सर गुरुदेव की दुकान पर आते थे। उन्होंने पहली ही नज़र में आपको पहचान लिया। वे पू. सरदारजी भाई साहब के घर आये और उनका आतिथ्य स्वीकार किया। इस प्रकार दो बिछड़ी हुई आत्माओं का पूर्व परिचय जाग्रत अवस्था में आ गया। पू. गुरुदेव भाग्यशाली मुराद

शिष्य थे। ऐसे शिष्य के लिये गुरु स्वयं साधन करता है। वे अपने गुरु पर जीजान से कुर्बान थे और पूज्य दादा गुरुजी की छत्रछाया में उन्हें धीरे धीरे आध्यात्मिक लाभ मिलने लगा

गृहस्थ जीवन में परिवर्तन की आंधी:– ऋतु अनुकूल हो और माली कुशल व साधन सम्पन्न तो बगिया रस रंग और सुगंध से खिल उठती है। पू. गुरुदेव का जीवन ऐसी ही एक बगिया के समान था। पू. दादा गुरुदेव का संरक्षण और आशीर्वाद, धन–धान्य से सम्पन्न गश्हस्थ, सुंदर स्वस्थ, सुशील एवं संस्कारवान संतान और इन सबके ऊपर तन मन धन से समर्पित, सेवा भाव से परिपूर्ण सुंदर पत्नी। ऐसे ही जीवन प्रवाह चल रहा था कि अचानक कब कहाँ से काली आँधी का तेज़ झोंका आया और घर में अंधेरा कर गया। गुरुदेव की पत्नी बीमार पड़ीं और कोई भी दवा, दुआ उन्हें बचा न सकी। जैसा कि पू. दादा गुरुजी ने कहा कि *''हमने अपनी आयु भी उनके लिऐ दे दी लेकिन विधाता को हमारी प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई''* सभी सदस्य हैरान, परेशान और दुखी थे। कहावत है कि *'बिन घरनी घर भूत का डेरा'*, गुरुदेव की घर गृहस्थी सभाँलने हेतु कोई कदम उठाना अनिवार्य था। बड़े सुपुत्र नरेंद्र सिंहजी जर्मनी में अध्ययन हेतु गये हुये थे। अतः उन्होंने छोटे सुपुत्र श्री हरजीत सिंह और भोली बिटिया की शादी सम्पन्न घरानों में कर दी। आशा थी कि अब घरबार ठीक रहेगा। किंतु नये युवा हाथ घर गृहस्थी सहित सत्संग का कार्यभार संभालने में सक्षम नहीं हुये। इस के पीछे विधाता का कुछ और भी रहस्य छुपा था। दादा गुरुदेव जी का आदेश हुआ– *''आप स्वंय विवाह करिये, अभी आपको सत्संग का बहुत कार्य करना है।''* इच्छा न होते हुये भी गुरुदेव ने आदेश का पालन किया और 20 मार्च 1960 को अमृतसर के एक संस्कारवान परिवार की विधवा बेटी से विवाह किया और सभी प्रकार का कार्यभार संभाला।

नई पत्नी सरदारनी जोगिंदर कौर का जीवन पूर्णरूप से सेवा साधना में समर्पित था। एक कुशल गृहणी, समर्पित पत्नी और ममतामयी माँ के सभी गुण उनमें थे। समय–समय पर उनकी सेवा और कुशलता से उनके सभी गुणों का लाभ और परिचय सत्संग परिवार को मिलता रहा है।

सन् 1952 में पूज्य दादा गुरुदेव जी की विशेष कृपा गुरुदेव पर हुई जब आपको उन्होंने अनामी पुरुष के दर्शन कराये और सत्संग के कार्य हेतु विशेष रूप से अपना लिया। किंतु उनकी विधिवत दीक्षा 1960 में हुई और आध्यात्मिक शिक्षा उनको मौन में मिलती रही। उन्होंने एक सच्चे और दीन शिष्य के रूप में स्वयं को समर्पित किया और प्रत्येक आज्ञा का अक्षरक्षः पालन किया। दादा गुरुदेव जी ने अपना सब कुछ उन्हें प्रदान कर दिया। 1964 में गुरुदेव को सम्पूर्ण आचार्य पदवी लिखित रूप में प्रदान की और बाद में लिखित आज्ञापत्र द्वारा उनकी नियुक्ति अपने स्थान पर आध्यात्मिक उत्तराधिकारी तथा रामाश्रम सत्संग (रजि.) के अध्यक्ष दोनों ही रूपों में की। तभी से गुरुदेव जीवन के अंतिम क्षण तक यह उत्तरदायित्व निभाते रहे। वैसे तो गुरुदेव दादा गुरुजी के साथ विभिन्न प्रांतों में सत्संग हेतु जाते रहे और उनके संरक्षरण में उनके मिशन को बढ़ाते रहे। 1970 में दादा गुरुजी के महाप्रयाण के बाद तो उन्होंने तन मन धन से स्वयं को इस मिशन और सत्संग के विस्तार के लिये समर्पित कर दिया। स्वास्थ कैसा भी हो कभी परवाह नहीं की। सर्दी, गर्मी सभी मौसम में सत्संगी भाईयों के साथ सदैव स्लीपर में ही यात्रा करते। बहुत आग्रह करने पर भी कोई विशेष सुविधा लेने को तैयार नहीं होते। भोजन भी वही करना पसंद करते जो सबके लिये बनता था। उन्होंने बिहार, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश के कितने ही स्थानों की यात्रा सत्संग हेतु की। इस प्रकार रामाश्रम सत्संग विस्तार पाता गया। आज विभिन्न प्रदेशों में सत्संग की 50 से अधिक शाखाऐं हैं। दादा गुरुदेव के सभी दैवीय गुण गुरुदेव के व्यक्तित्व में ज्यों के त्यों उतर आये। वे प्रेम,दीनता, करुणा, दया और सेवा की जीती जागती प्रतिमा थे। यदि हम उन्हें सच्चे मन से याद करें तो आज भी उनकी कृ पा का अनुभव होता है। उनके गुणों को याद करके हम आत्मविभोर हो उठते हैं।

समनव्य का सफल कार्यः– गुरुदेव के लिये सबसे कठिन कार्य था सिक्ख और हिंदुधर्म के बीच समनव्य स्थापित करना जो उन्होंने बड़ी कुशलता से किया। गुरुदेव के इस उदाहरण से शिक्षा और प्रेरणा लेनी चाहिए। गुरुदेव ने अपने घर पर अनेक बार 'श्री गुरुग्रंथ साहब' और

'श्रीरामचरितमानस' के अखंड पाठ का आयोजन किया और इस समागम में सभी ने बड़े उत्साह और आन्नद से भाग लिया। पूज्य दादा गुरुदेव जी के समय में भी कुछ मुसलमान संत भंडारे में आते थे और आशिर्वाद देते थे। गुरुदेव के प्रेम और सेवा ने सभी को इतना मोह लिया था कि बंगाली हो या पंजाबी, सनातनी हो या आर्यसमाजी सभी उनकी ओर खिंचे चले आते थे।

प्रेम, भाईचारा और बुजुर्गो का सम्मानः– स्वयं को सबसे छोटा मानना और दूसरों को आदर और सम्मान देना उनका सरल स्वभाव था। सिकंदराबाद में वार्षिक भंडारे पर आप सभी प्रमुख शिष्यों को लेकर पूज्य सेवती प्रसाद जी (मुख्तार साहब–फूफाजी) के दर्शनों को जाते, चरण स्पर्श करते और नम्र भाव से सामने नीचे बैठ जाते।

कृपा वर्षाः– गुरुदेव की दया, प्रेम और करुणा का भाव उनकी एक नज़र से ही किसी पीड़ित को मिल जाता था। एक बार गुरुपूर्णिमा के अवसर पर रात को हाजीपुर के एक सत्संगी भाई को हार्ट अटैक आया। सभी घबरा गये। परिवार को सूचना भेजी गई और सब अस्पताल में सेवा और प्रार्थाना में लगे रहे। गुरुदेव उन्हें देखने अस्पताल पहुँचे और पूछा 'कहाँ दर्द है', उन्होंने बताया कि छाती में दर्द है। गुरुदेव ने वहाँ हाथ रखा और कहा 'कोई बात नहीं आप ठीक हो जायेंगे'। और ऐसा चमत्कार हुआ कि वे दो दिन में ठीक होकर अपने निवास को वापस भी चले गये।

टाटा के श्रीवस्तव साहब की पत्नी असाध्य रोग से पीड़ित अंतिम अवस्था में अस्पताल में थी। कष्ट में भी गुरुदेव से प्रार्थना कर रहीं थीं कि 'हमें छोड़ मत दीजियेगा'। और गुरुदेव ने उन्हें ऐसा आश्वासन, धीरज और साहस प्रदान किया कि ऐसी कष्टदायक बीमारी में भी वो बड़ी शांति से स्वर्ग प्रयाण कर गईं।

सेवकों पर प्रेमः– शिशु मंदिर में भंडारा समापन हुआ। डा. शक्ति जी ने चलते समय सभी सेवकों को दर्शनार्थ बुलाया और गुरुदेव से परिचय कराया। सभी हाथ जोड़े रवड़े थे और गुरुदेव बड़े प्रेम से उनका हाथ पकड़कर कह रहे थे ''आपकी सेवाओं का कैसे शुक्रिया करूँ''। कर्मचारी,

चौकीदार, जमादार सभी खड़े थे, मौन और कृतज्ञ– कैसा अद्‌भुत दृश्य था जैसे राम स्वयं निषाद को गले लगा रहे हों।

घनिष्ट रिश्ते:– *''तोहे मोहे नाते अनेक मानिये जो भावे''*। संत तुलसीदास की ये पंक्तियाँ साकार रूप में गुरुदेव के जीवन में दिखाई देती हैं। किसी ने उनसे पिता का संरक्षण पाया तो किसी ने भाई का प्यार तो कोई मित्र समान साथी बना। सभी को अपनी भावना उनकी प्यार भरी नज़र में दिखाई देती थी। शोभा जी सदैव उन्हें राखी बाँधती थी। उर्मिला जीजी विजयादशमी को उनका टीका करती थी। स्वयं मैंने उनसे सदैव पिता का संरक्षण और प्यार पाया। स्वर्गवासी मधु ने तो एकबार उनमें साक्षात् गणेश जी के दर्शन कर उन्हें दूध भोग अर्पित किया और उन्होंने स्वीकार किया।

शास्त्रों का ज्ञान:– गुरुदेव के प्रवचनों में ज्ञान, भक्ति, वैराग्य और सभी पंथों के धर्म ग्रंथों का सारगर्भित अर्थ सहित वर्णन मिलता है। ईसामसीह का बलिदान, हज़रत मुहम्मद साहब की शिक्षायें, भगवान बुद्ध के पाँच मराक़बे, गीता का सार और उपदेश, दादा गुरुदेव जी की प्रवचन प्रसादी के अमृतकण– सभी का प्रसाद भक्त शिष्यों की झोली में पड़ता रहा है।

पर्व त्योहार:– गुरुदेव के परिवार के साथ पर्व त्योहार का आनंद हज़ार गुना बढ़ जाता था। सरदारनी भाभी जी के साथ सुहागिनों का करवाचौथ पूजन, दीपावली की दीपमाला और लक्ष्मी पूजन का आनंद, सभी कुछ हमारे मन को प्रेम, भक्ति और श्रद्धा से भर देता था।

दीनता और सेवा की पराकाष्ठा:– गुरुदेव दीनता और सेवा की जीती जागती प्रतिमा थे। कोई भी सत्संगी उनके घर से बिना भोजन प्रसाद पाये न जाने पाता। यदि कोई बाहर से आता तो उसके भी रहने व भोजन आदि का प्रबंध स्वयं करते या किसी सत्संगी से करवाते। जब कभी उनसे कुछ पूछने की इच्छा होती तो उनकी वाणी सुनकर ही इतना संकोच होता कि समझ नहीं पाते कि अब क्या और कैसे कहें। उनके शब्द होते ''हुक्म करिये आपकी क्या सेवा करूँ'' और फिर कुछ देर हमारी कुछ भी बोलने की हिम्मत नहीं होती। पूज्य दादा गुरुदेव जी कहा करते थे कि ''संत दुनिया बनाते नहीं उजाड़ते हैं''। इन शब्दों से ही दिल दहल जाता है।

लेकिन इस कटु सत्य को कोई भी नकार नहीं सकता। गुरुदेव के जीवन में भी ऐसे कई तूफान आये जिनके थपेड़ों से हम सब भी कराह उठे तो उनका न जाने क्या हाल हुआ होगा, किंतु उन्होंने अपने चेहरे पर शिकन भी नहीं आने दी। पत्नी का वियोग तो युवावस्था में झेला ही था पर वृद्धवस्था में अपने लाड़ले जवान पुत्र के वियोग ने उन्हें बुरी तरह से झकझोर दिया। किंतु देखिये शमशान में स्वयं क्या कह रहे हैं ''भगवान कृष्ण अर्जुन से पूछ रहे हैं कि अर्जुन कल तो तू पुत्र की मृत्यु पर ब्राहमण को समझा रहा था, ज्ञान दे रहा था आज क्यों रो रहा है?'' इन शब्दों को सुनकर दुःख से सबका कलेजा फटने लगा। फिर एक दिन समाचार मिला कि भोली बिटिया भी उन्हें छोड़कर चली गई। गुरुदेव कुछ नहीं बोले। मौन हो गये। इस चोट को कैसे बर्दाश्त करें। हम सबकी निष्ठा जैसे डगमगाने लगी। क्या संतों का जीवन स्वयं दुख झेलने और दूसरों के दुख दूर करने के लिये ही होता है? हे प्रभु यह कैसा न्याय है? क्या निर्मम आघात देना ही उसका विधान है? क्या उस करुणा सिंधु के पास और कोई उपाय नहीं है? जो स्वयं प्रेम के सागर हैं वो ऐसे प्रेम प्यार के रिश्तों को क्यों नष्ट कर देते हैं? कोई जवाब नहीं मिलता। यहाँ तो एक ही तरीका है :–

''चोट पे चोट खाये जा, यार से लौ लगाये जा,
आह न कर जुबाँ को सी, इश्क है दिल्लगी नहीं।''

आज गुरुदेव का पार्थिव शरीर हम नहीं देख सकते किंतु उनकी कृपा को हर पल अनुभव कर सकते हैं और कर भी रहें हैं। गुरुदेव का पूरा जीवन प्रेममयी अमृत निधियों का ऐसा झरना है जो अपनी शीतलता और शक्ति से आज भी हमको साहस और सुकून देता है। प्रार्थना है कि हम इस कृपा वर्षा को आत्मसात करने योग्य बन सकें –

''श्रीगुरु चरण सरोज रज निज मन मुकुर सुधार''

अध्यक्षीय सन्देश

एक नम्र निवेदन

गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पांय,
बलिहारी गुरु आपने जो गोबिन्द दियो मिलाय।

बिना गुरु गति नहीं है, यह एक ऐसा सत्य है जिसे हम किसी भी प्रकार झुठला नहीं सकते। हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमें मनुष्य चोला मिला है, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस जीवन काल में ही हमें गुरु की शरण भी मिल गयी। हम में से कुछ ऐसे भाई बहन भी हैं जिन्होनें न सिर्फ इस सदी की दो महान विभूतियों परमसंत डा. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज और परमसंत डा. करतार सिंह जी साहब के दर्शन ही किये परंतु उनका संरक्षण और सान्निध्य भी प्राप्त किया। मेरा यह मानना है कि रामाश्रम सत्संग के इन महापुरुषों का जीवन अपने आप में एक ऐसी मिसाल है जो हम सब का हर पल हर क्षण मार्गदर्शन कर रहा है और आजीवन प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

हमारे दादा गुरुदेव परमसंत डा. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज संतमत के अति उच्चकोटी के संत हुए हैं। उन्होंने अपने गुरुदेव परमसंत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज के गुरुमुख शिष्य होने के नाते संतमत की आध्यात्मिक शिक्षा को प्रेम, करुणा, दीनता, सेवा एवं परोपकार की भावना से भूले भटके और ज़रुरतमन्द लोगों तक पहुँचाने का काम आजीवन किया और अपने आप को इसी मिशन की भेंट कर दिया। ऐसे बहुत लोग हैं जिनके जीवन में उनकी कृपा से जो परिवर्तन हुआ, जो उजाला हुआ उसका प्रकाश आज भी दिखाई देता है। जिस किसी ने भी उनसे सच्चा प्रेम किया उसको उन्होंने अपना लिया। पूज्य गुरुदेव डा. श्रीकृष्णलाल जी महाराज का कहना था कि *''एक प्रेम के नाते को छोड़ मैं किसी और नाते को नहीं जानता, केवल प्रेम और वह भी निस्वार्थ प्रेम। जो लोग बिना स्वार्थ के मुझसे प्रेम करते हैं, चाहे वे कैसे भी हैं,*

उन्हें मैं प्रेम करता हूँ, वे मेरे हैं और मैं उनका। वे सदैव मुझ पर आश्रित रह सकते हैं और वे देखेंगे कि मैं सदैव उनकी सेवा के लिये प्रस्तुत हूँ।'' इस अटूट प्रेम और श्रद्धा का जीवंत उदाहरण अगर कोई है तो वे हैं हमारे गुरुदेव परमसंत डा. करतार सिंह जी साहब जिन्होंने अपना पूरा जीवन अपने गुरुदेव को समर्पित कर दिया। वे अपने गुरुदेव के किसी भी आदेश का पालन करना अपना धर्म समझते थे। ऐसे बहुत कम संत हुए हैं जो शतायु हुए हों और हमारे गुरुदेव डा. करतार सिंह जी साहब उनमें से एक थे। आज स्थूल रूप में गुरुदेव हमारे बीच नहीं हैं लेकिन यह भी सत्य है कि सूक्ष्म रूप में आज भी वे हमारे साथ हैं और हम सब पर उनकी अपार कृपा निरंतर बरस रही है, जिसको हम सब बार बार महसूस कर रहे हैं और करते रहेंगे। वे बड़े ही प्यार से कहा करते थे 'बोलो आप की क्या सेवा कर सकता हूँ?' हर कोई इस कदर भाव विभोर हो जाया करता था की आगे कुछ भी कहने की हिम्मत ही नहीं होती थी। गुरुदेव हमेशा एक बात पर ज़ोर दिया करते थे कि *''आप चाहे कोई भी साधन करिये दीनता को तो अपनाना ही होगा। अहँकार से प्रभु नहीं मिलते, अहँकार ही हमारी सबसे बड़ी बाधा है।''* उनका कहना था *''कितने बरस हो गये सत्संग में आते हुये परंतु अभी भी हम असंतुष्ट हैं।"* उनका यह भी कहना था कि *''हमें निरंतर मनन और स्वनिरीक्षण (introspection) करना चाहिए, ... हम आज कहाँ हैं, ... मानसिक स्थिति क्या है?''*

हम ईमानदारी से अपने भीतर झांक कर देखें कि क्या हमनें सच्चे रूप में दीनता को अपनाया है? क्योंकि यह सत्य है कि जब तक दीनता को नहीं अपनाऐंगे हमारा कल्याण नहीं हो सकता। हम दूसरों के अवगुण तो देखते हैं परंतु अपने भीतर देखें, तो जो अवगुण दूसरों में देखते हैं, वो अपने अंदर ही नज़र आऐंगे। उन्हें दूर करने के लिये निज कृपा और गुरु कृपा दोनों का सहारा लेना होगा।

आज समय आ गया है कि हम अपनी कमियों को समझें, और देखें कि कैसे अपनी कमियों को दूर कर सकते हैं, और जैसा गुरुदेव चाहते थे वैसा बनने की कोशिश करें। मेरा यह मानना है और सविनय

अनुरोध है, कि यदि हम सेवा को अपने जीवन में अपना लें तो जीवन बहुत ही सरल हो जायेगा और हम देखेंगे कि हममें दीनता और प्रेम दोनों ही अपने आप आ जायेंगे और हम उस परम अवस्था को प्राप्त कर सकेंगे, जो हमारे जीवन का लक्ष्य है।

आशा करता हूँ कि आप मेरे विचारों से सहमत होंगे और मेरे अनुरोध को स्वीकार कर मुझे अनुग्रहित करेंगे। मुझे यकीन है कि आपका जो सहयोग मुझे और रामाश्रम सत्संग को आज तक मिलता रहा है वह आगे भी मिलता रहेगा और हम मिल कर गुरुदेव के इस मिशन को पूरा करने में कामयाब होंगे।

''तेरे करम से बेनियाज़ कौन सी शह मिली नहीं,
झोली ही अपनी तंग है, तेरे यहाँ कमी नहीं!''

गुरुदेव सबका कल्याण करें.

– डा. शक्ति कुमार सक्सेना

अनमोल वचन

इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाये।
इस तरह न खर्च करो कि कर्ज हो जाये।
इस तरह न खोओ कि मर्ज हो जाये।
इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाये।
इस तरह न चलो कि देर हो जाये।
इस तरह न सोचो कि चिन्ता हो जाये।

रामाश्रम सत्संग (रजिस्टर्ड)

रजिस्टर्ड ऑफिसः 9–रामाकश्ष्णा कॉलोनी, जी.टी.रोड, ग़ाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश

डा. शक्ति कु0 सक्सेना

अरविन्द मोहन आचार्य एवं अध्यक्ष

मंत्री

घोषणाः संस्था की कार्यकारिणी समिति– (2012–2013)

मैं, शक्ति कुमार सक्सेना, पुत्र स्व. श्री कृष्ण सहाय सक्सेना, आचार्य/अध्यक्ष रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.) संस्था की वर्तमान कार्यकारिणी भंग करता हूँ। वर्ष 2012–2013 के लिए संस्था के विधान की धारा 10 (ग) में प्रदत्त अधिकारों के तहत नवीन कार्यकारिणी समिति, पदाधिकारी एवं सदस्यों की निम्नवत् घोषणा करता हूँ, जो विधान की धारा 9 (ग) के अनुरूप एक वर्ष हेतु वैध रहेगी :–

क्र.	पद	नाम	पता	व्यवसाय
1.	अध्यक्ष	डा. शक्ति कु. सक्सेना	एस–ए–36 शास्त्रीनगर, ग़ाज़ियाबाद–201003	डाक्टर
2.	मंत्री	श्री अरविन्द मोहन	2–बी, नीलगिरी–3, सेक्टर–34, नौएडा–201301	सर्विस
3.	कोषाध्यक्ष	श्री ईश्वर स्वरूप सक्सेना	के. एम.–144ए कविनगर, ग़ाज़ियाबाद–201003	सेवानिवृत
4.	सदस्य	श्री कुंवर बहादुर सक्सेना	कृष्ण करतार भवन बी–107, राजाजीपुरम तालकटोरा, रोड, लखनऊ–226017	सेवानिवृत
5.	सदस्य	श्री भजन शंकर	कोठी नं. 84/14, दिल्ली रोड, गुड़गाँव–122015	सेवानिवृत

6. सदस्य	कैप्टन के.सी. खन्ना	आर–11/182, राजनगर न्यू ग़ाजियाबाद–201010	सेवानिवृत
7. सदस्य	श्री उमाकांत प्रसाद	207, संयम प्रतीक अपार्टमेन्ट, खाजपुरा, पटना–800014	सेवानिवृत
8. सदस्य	डा. दिनेश कुमार श्रीवास्तव	छावनी मौ. वार्ड नं.–4. पो. आ.–भभुआ, कैमूर	सर्विस
9. सदस्य	डा. मुद्रिका प्रसाद	साकेतपुरी मुजफ़्फरपुर बिहार	सेवानिवृत्त
10. सदस्य	श्री प्रियासरन	105–हिमालय टॉवर अहिंसा रवण्ड–2, इन्द्रापुरम ग़ाज़ियाबाद	सेवानिवृत्त
11. सदस्य	श्री अनिल कुमार	6, चेतना समिति ए. जी. कालोनी, पटना	सर्विस
12. सदस्य	श्री विष्णु शर्मा	आर–27,नारायणा विहार जयपुर	सर्विस
13. सदस्य	श्री रमेश चन्द्र जौहरी	सिन्ध का बाड़ा जनकगंज, ग्वालियर	सेवानिवृत्त
14. सदस्य	प्रो. आर. के. सक्सेना	33–देशबन्धु सोसाईटी आई. पी. एक्सटेंशन नई दिल्ली–110092	सर्विस

(ह.)

डा. शक्ति कुमार सक्सेना

अध्यक्ष एवं आचार्य

रामाश्रम सत्संग (रजिस्टर्ड)

दिनांक 21–10–2012

ग़ाजियाबाद,

शोक समाचार

सखेद सूचना दी जाती है कि निम्नलिखित बहन–भाइयों का देहावसान हो गया है :–

1. आरा के श्री सत्य प्रकाश राय की माताजी श्रीमती दमयंती देवी का दिनांक 12/2/2012 को;
2. मुज़फ़्फ़रपुर के श्री दिलीप कुमार के अग्रज श्री देवेन्द्र प्रसाद का दिनांक 28/2/2011 को;
3. अलीगढ़ के श्री देवेन्द्र सिंह के पिताजी श्री कालेसिंह मुरिवया जी का दिनांक 9/6/2011 को;
4. सासाराम के श्री मोती लाल चौधरी का दिनांक 30/10/2010 को;
5. सासाराम के श्री सत्येन्द्र मेहता की माताजी श्रीमती चंद्रज्योता देवी का दिनांक 23/10/2010 को;
6. कुण्डवा चैनपुर के श्री मोहनेन्द्र सिन्हा की धर्मपत्नी श्रीमती प्रमिला सिन्हा का दिनांक 24/2/2012 को;
7. आरा (भोजपुर, बिहार) के श्री राम लखवन प्रसाद की धर्मपत्नी श्रीमती राज कुमारी देवी का दिनांक 31/5/2012 को;

8–9 चकिया के श्री रामवृक्ष सिंह जी की धर्मपत्नी का दिनांक 25/4/2012 को तथा श्री राम श्रृंगार जायसवाल का दिनांक 28/7/2012 को

10. लखवनऊ के श्री सुकुमार कर का दिनांक 4/8/2012 को।
11. लखवनऊ के श्री बी. एन. भण्डारी का दिनांक 7/9/2012 को।

इन सभी दिवंगत आत्माओं को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो तथा इनके विरहाकुल परिवारी प्रियजनों को वियोग व्यथा सहने की शक्ति और धैर्य मिले – यही प्रभु से प्रार्थना है।

– डा. शक्ति कुमार सक्सेना

परमार्थ परामर्श

प्रेम, शान्ति व संतोष से ही परमात्म साक्षात्कार

परिवार में शान्ति और संतोष ही परमात्म साक्षात्कार का कारण बनता है। प्रेम रहित परिवार वैसा ही है जैसा प्राण रहित शरीर। जिस परिवार प्रमें प्रेम व शान्ति है वह परिवार ही स्वर्ग सदृश बन जाता है। जिस परिवार में कलह व संघर्ष है वह वास्तव में नरक है। नवीन शोध व अनुसंधान के आधार पर यह सच्चाई प्रमाणित हो चुकी है कि प्रेम की कमी ही खतरनाक शारीरिक व मानसिक रोगों का आधार है, यह सबसे बड़ा रोग है। इस दृष्टि से परिवार में प्रथम आवश्यकता है प्रेम व शान्ति।

परिवार में शान्ति व संतोष होने से ही सतत परमात्म चिंतन की धारा प्रवाहित हो सकती है। आपके पास शानदार मकान, मोटर गाड़ियाँ, नौकर–चाकर, बाग–बगीचा, बेशकीमती जेवर, घरेलु वस्तुएं, अत्यधिक खाद्य सामग्री आदि सब प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं हैं मगर आपके परिवार में शान्ति व प्रेम नही है तो कुछ भी नहीं। सबसे पहले परिवार की शान्ति जरूरी है। इसके विपरीत आपके पास सामान्य सुख सुविध ा है मगर परिवार में शान्ति व प्रेम है तो आपको ऐसा महसूस होगा कि मेरे पास सब कुछ है। महापुरुषों का कहना है कि जहाँ प्रेम है वहाँ सब कुछ है, जहाँ प्रेम नहीं है वहाँ कुछ नहीं है।

सामान्य व्यक्ति परिवारिक प्रेम व शान्ति के चमत्कारिक प्रभावों की कल्पना भी नहीं कर पाता है। यदि आपके परिवार में प्रेम है तो आप एकदम शांत व प्रसन्न रहेंगे। आपका शरीर स्वस्थ रहेगा, आपकी संतान का सर्वांगीण विकास होगा। परिवार आपके बंधन का कारण नहीं बनेगा। जब तक आप परिवार में रहेंगे तब तक खूब प्रसन्नता से रहेंगे।

जिस प्रकार जीवित रहने के लिए हवा व भोजन आवश्यक है, उसी प्रकार परिवारिक शान्ति व प्रेम को सुरक्षित बनाये रखने के लिये प्रेम के मूलभूत सिद्धातों का पालन करना आवश्यक है। यदि आप इन सिद्धांतों का पालन नहीं करेंगे तो आप सदैव अशांत व दुखी रहेंगे। और

आपके परिवार में कलह रहेगी। अनुकूल परिस्थिति के सुख में आपको अस्थायी आराम जरूर मिलेगा, मगर स्थायी प्रसन्नता कभी नहीं मिलेगी। परमात्म साक्षात्कार के लिए परिवार में भी परमात्म दृष्टि बनानी पड़ेगी। परिवारजनों के साथ आपका जो रिश्ता है उसी के अनुरूप आप व्यवहार कीजिए। पति के साथ पति जैसा, पुत्र के साथ पुत्र जैसा, सास के साथ सास जैसा, बहन के साथ बहन जैसा, पिता के साथ पिता और पत्नी के साथ पत्नी जैसा व्यवहार कीजिये। अपने प्रत्येक व्यवहार से अपने परिवारजनों को प्रेम दीजिये। प्रेम देने का आशय है प्रसन्नता देना। अपने हृदय में प्रसन्नता देने की भावना बनाये रखिये।

परिवार के लिये अपने मन में सदैव यही सोचें कि मैं जिन परमात्मा की पूजा करता हूँ या करती हूँ वही प्रभु मेरे परिवार के सदस्य बनकर पधारे हैं। परिवार के सदस्य को साक्षात परमात्मा मान लीजिए। यदि आपको इसमें कठिनाई हो तो आप परिवारजनों को अपने प्रभु का मेहमान मान लीजिए, अपने चिंतन से बदल दीजिए।

अभी आपका चिंतन यह है कि ये मेरे पति हैं, पिता हैं माँ है, पुत्र है आदि। मगर अपना दृष्टिकोण बदल कर देखो। अब आप यह चिंतन करें कि यह सब प्रभु या प्रभु के मेहमान है। इस चिंतन से परिवार को प्रेम देने में, आपको अभूतपूर्व मदद मिलेगी। आप सभी को सुगमता से प्रेम वितरित कर पाएंगे।

●●●

राम संदेश के नियम

1) आध्यात्मिक विद्या के गुप्त और अनुभवी रहस्यों तथा सदाचार-शिक्षा को सरल भाषा में जनता तक पहुँचाना हमारी राम संदेश पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

2) राम-संदेश में आत्मिक, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लेख ही छपते हैं, राजनैतिक या रोमांचक लेख नहीं। रचनाओं में काट-छांट करने अथवा छापने, या न छापने की स्वतंत्रता सम्पादक को है।

3) राम संदेश का वर्ष जनवरी से आरम्भ होता है। चन्दा फ़िलहाल 20/- (बीस) रुपये है। एक वर्ष से कम तथा आजीवन ग्राहक नहीं बनाये जाते। **डा. एस. के. सक्सेना, 9 नव युग मार्केट, गाज़ियाबाद, उ.प्र. 201009,** के पते पर जनवरी-फ़रवरी के अंत तक अवश्य भिजवा दें।

4) पत्र व्यवहार करते समय कृपया अपना ग्राहक नम्बर लिखें और पता लिखा कार्ड या लिफ़ाफ़ा भी अवश्य भेजें। पता बदलने की सूचना, डाकघर के पिन कोड सहित निम्न पते पर :-

डा. एस. के. सक्सेना, 9 नव युग मार्केट, गाज़ियाबाद, उ.प्र. 201009

कृपया तुरन्त भेज दें – अन्यथा आपकी प्रति वापस आ जाती है या 'विलीन' हो जाती है।

5) राम संदेश के समस्त ग्राहकों की प्रतियाँ बड़े ध्यान से हर बार नौएडा, सैक्टर 34 के डाकघर में पोस्ट की जाती हैं। यहाँ तक की ज़िम्मेदारी हमारी है, आगे की नहीं। यदि 1,3,5,7,9 और 11वें महीने के अंत तक भी राम संदेश की प्रति न पहुँचे तो कृपया उसकी सूचना **डा. एस. के. सक्सेना, 9 नवयुग मार्केट, गाज़ियाबाद, उ.प्र. 201009,** के पते पर अवश्य दें।

राम संदेश

रजि. ऑफिस

9-रामाकृष्णा कॉलोनी, जी. टी. रोड,
गाजियाबाद – 201009

सम्पादकीय पता

डा. एस. के. सक्सेना
9 नवयुग मार्केट,
गाज़ियाबाद, उ.प्र. 201009

PERIODICAL

ग्राहक संख्या, नाम, पता

मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

मुद्रण : अंकोर पब्लिशर्स (प्रा.) लिमिटेड, बी-66, सैक्टर-6, नौएडा-201301